17 जनवरी 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 20
जनवरी (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की वार्षिक -

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 29 दिसम्बर 2019 से 11 जनवरी 2020 तक विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

उद्घाटन सभा के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित बाहुबलीजी भोसगे, पण्डित भरतेशजी भोसगे, पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण दिव्यांश जैन अलवर ने, संचालन दुर्लभ जैन, विनय जैन ने एवं स्वागत भाषण जिनकुमारजी शास्त्री ने प्रस्तुत किया।

सभी प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नानुसार है -

(1) अनिवार्य भाषण प्रतियोगिता - दिनांक 30 दिसम्बर को प्रात:काल आयोजित इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग से मयंक जैन फुटेरा ने एवं शास्त्री वर्ग से अतिशय चौरई ने स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का विषय उपाध्याय वर्ग हेतु 'शाकाहार : श्रेष्ठ आहार' एवं शास्त्री वर्ग हेतु 'वर्तमानकालीन समस्याएं और जैनधर्म' था। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे। निर्णायक डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया व साकेतजी जैन थे। संचालन अरिहंत जैन, भूपेन्द्र जैन ने किया।

(2) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग) - दिनांक 31 दिसम्बर को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में आदित्य जैन ने प्रथम एवं समर्थ जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष राजेशजी शाहगढ एवं निर्णायक सर्वज्ञजी भारिल्ल थे। संचालन सिद्धान्त शेट्टी व सचिन जैन ने किया।

(3) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग) - दिनांक 1 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में पल त्रिवेदी ने प्रथम एवं पवित्र जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष संजीवजी खड़ैरी, मुख्य अतिथि कैलाशचंदजी सेठी एवं निर्णायक गौरव जैन व पीयूष जैन उपस्थित थे। संचालन वैभव उखलकर व अंकित जैन ने किया।

(4) संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता - दिनांक 1 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में पवित्र जैन ने प्रथम एवं दुर्लभ जैन व अरविन्द जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. दयानन्दजी भार्गव थे। निर्णायक वाई. एस. रमेश, डॉ. प्रमोदजी जैन, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील थे। संचालन मयंक जैन बण्डा व मयंक जैन लखनादौन ने किया।

(5) अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता - दिनांक 2 जनवरी को प्रात: हुई इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान समर्थ जैन विदिशा एवं द्वितीय स्थान संभव जैन व समर्थ हरदा ने प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुंजा पाटनी ने की। निर्णायक प्रतीति पाटील, स्वानुभूति जैन, सर्वदर्शी भारिल्ल थे। संचालन स्वप्निल जैन व वैभव जैन ने किया।

(6) अंत्याक्षरी प्रतियोगिता - दिनांक 2 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में अमन जैन-अर्पित जैन (कैलाश पर्वत) ने प्रथम तथा सोमिल जैन-अमन खनियांधाना (चम्पापुर टीम) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष संजय जैन बड़ामलहरा एवं मुख्य अतिथि जिनकुमारजी शास्त्री थे। निर्णायक जिनेन्द्र जैन व रूपेन्द्र जैन थे। संचालन सहज जैन व सजल जैन ने किया।

(7) शलाका प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग) - दिनांक 3 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में समर्थ जैन ने प्रथम एवं राहुल जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना एवं मुख्य अतिथि नीशूजी शास्त्री थे। निर्णायक के रूप में अमन जैन व श्री डी.के. जैन उपस्थित थे। संचालन आयुष जैन गौरझामर व सम्मेद खोत ने किया।

(8) काव्यपाठ प्रतियोगिता - दिनांक 3 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में समकित जैन प्रथम एवं आप्त जैन द्वितीय स्थान पर रहे। अध्यक्ष श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं निर्णायक श्री अखिलजी बंसल व अनिलजी जैन थे। संचालन संयम जैन व निखिल जैन ने किया।

(9) श्लोक पाठ प्रतियोगिता - दिनांक 4 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग से चेतन जैन एवं शास्त्री वर्ग से पवित्र जैन ने स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील एवं निर्णायक नयन जैन व जिनकुमार जैन थे। संचालन समर्थ जैन व रवीन्द्र जैन ने किया।

(10) भजन प्रतियोगिता - दिनांक 4 जनवरी को रात्रि में हुई इस प्रतियोगिता में दर्शन सिंघई ने प्रथम एवं शिवराज स्वामी ने द्वितीय स्थान

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

सम्पादकीय –

समयसार : संक्षिप्त सार

6

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जैनपथप्रदर्शक के संस्थापक सम्पादक आदरणीय पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा पूर्व में लिखित क्रमश: प्रकाशित यह संक्षिप्त सार पूर्ण होने तक पाठकों के लाभार्थ नियमित प्रकाशित किया जायेगा।

(गतांक से आगे...)

७. बन्धाधिकार : निर्बन्धद्वार –

इस बन्धाधिकार में निर्बन्ध, निष्कषाय और निर्भय होने का मूल मन्त्र या अमोघ उपाय बताया गया है। कर्मबन्ध का मूल कारण अपना अज्ञानजन्य राग-द्वेष-मोह रूप अध्यवसान है। यदि आत्मा में अध्यवसान भाव है तो जीवों को मारो या न मारो, बन्ध निश्चित होगा ही। और यदि राग-द्वेषादि अध्यवसान नहीं है तो भले जीव मर जावे तो भी बन्ध नहीं होगा। यद्यपि रागादि अध्यवसान भाव किसी न किसी व्यक्ति या वस्तु के अवलम्बन से होते हैं; परन्तु बन्ध उस व्यक्ति या वस्तु के कारण नहीं, बल्कि अपने अध्यवसान से होता है। अतः परवस्तु या व्यक्ति पर राग-द्वेष करना व्यर्थ है।

जिस प्रकार तेल लगाकर धूल भरे अखाड़े में व्यायाम करने से पुरुष को जो मैल लगता है, उसका कारण तेल है, व्यायाम व अखाड़ा नहीं; उसीप्रकार बन्ध का कारण मात्र रागादि अध्यवसान है, कर्मरज, मन-वचन-काय की प्रवृत्ति तथा चेतन-अचेतन की हिंसा व पंचेन्द्रिय के भोगादि बन्ध के कारण नहीं हैं।

इस अधिकार में पर को सुखी-दु:खी करने, मारने-जिलाने या पर के द्वारा सुखी-दु:खी होने, मारने-जीवित रखने की मिथ्या मान्यता सम्बन्धी जो २४७ से लेकर २६६ तक २० गाथाएँ हैं वे अत्यन्त मार्मिक हैं। वे पाठकों की मिथ्या मान्यता पर सीधी चोट करती हैं। उनमें कहा गया है कि यदि कोई ऐसा मानता है कि मैं अन्य को मार सकता हूँ या अन्य जन मुझे मार सकते हैं, तो उसकी यह मान्यता अज्ञानमय है; क्योंकि जब मरण आयु के क्षय से ही होता है तो तुम किसी को कैसे मार सकते हो? और अन्य जन भी तुम्हें कैसे मार सकते हैं? न तो तुम किसी की आयु छीन सकते हो और न कोई तुम्हारी आयु छीन सकता है।

इसीप्रकार मैं अन्य को बचाता हूँ या अन्य जन मुझे बचाते हैं – यह मान्यता भी मिथ्या है; क्योंकि सभी जीव अपने-अपने आयुकर्म से जीवित रहते हैं। न तो हम किसी को आयु दे सकते हैं, न हमें कोई अपनी आयु दे सकता है। तो फिर हमने किसी को बचाया या हमें किसी ने बचाया – यह मान्यता भी मिथ्या है।

यही सिद्धान्त पर को सुखी-दु:खी करने के सम्बन्ध में एवं पर से स्वयं के सुखी-दु:खी होने के सम्बन्ध में लागू होता है। अज्ञानी जीव इसी मिथ्या मान्यता से दु:खी हैं।

एतदर्थ आचार्य कुन्दकुन्द ने गाथा २६७ से २६९ तक। तीन गाथाओं में मार्मिक उद्बोधन करते हुए कहा है कि **हे भव्यजन! तुम जरा गहराई से सोचो कि जब तुम्हारा पर में कुछ भी हस्तक्षेप नहीं हो सकता, तुम्हारी कुछ भी नहीं चलती तो फिर तुम क्यों व्यर्थ ही उनमें राग-द्वेष करके कर्मबन्ध करते हो?**

यदि कोई ऐसा कहे कि ''ये तो निश्चयनय की बातें हैं और हम तो व्यवहारीजन हैं। अतः हमें तो व्यवहार से ऐसा ही मानना पड़ेगा कि हम दूसरों का भला-बुरा कर सकते हैं।'' तो उसका समाधान करते हुए आचार्य २७२वीं गाथा में कहते हैं कि ''निश्चय-नयाश्रित ज्ञानी जन ही निर्वाण की प्राप्ति करते हैं। इसी संदर्भ में समयसार गाथा २७३ से २७५ मूलतः द्रष्टव्य हैं।

८. मोक्ष अधिकार : सम्यकपुरुषार्थ अधिकार –

इस अधिकार में मोक्षप्राप्ति के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित चार बिन्दुओं पर विचार किया गया है –

(१) सम्यक्पुरुषार्थ (२) भेदविज्ञान सहित विराग (३) परद्रव्य का ग्रहण करना अपराध (४) निश्चय से प्रतिक्रमण भी विषकुम्भ। इन चारों बिन्दुओं का मोक्ष एवं मोक्षमार्ग से सीधा सम्बन्ध है।

सर्वप्रथम सम्यक्पुरुषार्थ पर जोर देते हुए कहा है कि ''जीव अनादि काल से जिन कर्मों से बँधा है उनसे छूटने के

लिए उन्हें मात्र जान लेने और उनके प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभाग आदि तथा उदय, उदीरणा, बन्ध एवं सत्त्व आदि भेद-प्रभेदों की सूक्ष्म चर्चा कर लेने से भी मुक्ति नहीं मिलती। तात्पर्य यह है कि गम्भीर चर्चा-वार्ता एवं उसके स्वरूप का बारम्बार चिन्तन-मनन मुक्ति के सीधे साधन नहीं है। मुक्ति के लिए कर्मबन्ध के कारण मोह-राग-द्वेष का नाश करना आवश्यक है, जो कि भेद-विज्ञान से होता है।

जिसप्रकार प्रज्ञाछैनी द्वारा कर्मों से आत्मा का भेदज्ञान किया जाता है, उसीप्रकार प्रज्ञाछैनी से ही कर्मों के त्यागपूर्वक निजात्मा का ग्रहण होता है। जब ज्ञानी जीव प्रज्ञा से जीव व कर्म के स्वभाव को भिन्न-भिन्न जानकर यह निश्चय करता है कि दुःख के कारणभूत बन्ध छेदने योग्य है और सुखस्वरूप शुद्ध आत्मा ग्रहण करने योग्य है, तब वह रागादि कर्मों से विरक्त हो जाता है और तभी उसका कर्मबन्धन से मुक्त होने का मार्ग प्रशस्त होता है। उस समय उसको प्रज्ञा द्वारा ऐसा विचार आता है कि जो चिदात्मा है, निश्चय से मैं वह हूँ, जो ज्ञाता-द्रष्टा है वह मैं हूँ, अर्थात् मैं चिदात्मा हूँ, ज्ञाता-दृष्टा हूँ, इसके अतिरिक्त सब भाव मुझसे पर हैं, वे मेरे नहीं है, अतः त्याज्य हैं।

आचार्य कहते हैं कि ''जिस प्रज्ञा के द्वारा भेदज्ञान किया जाता है, उसी प्रज्ञा के द्वारा आत्मा का ग्रहण करना चाहिए।''

ज्ञायक स्वभाव से भ्रष्ट होना ही अपराध है **'अपगत राधः इति अपराधः'।** 'राध' शुद्धात्मा की आराधना को कहते हैं, अतः जो आत्मा राध रहित है - शुद्धात्मा की आराधना से रहित है, ज्ञायकस्वभाव से भ्रष्ट है, वह अपराध है।[१] जब प्रज्ञा से शुद्धात्मा ग्रहण होता है, तब आत्मा निरपराधी होता है।

व्यवहार से ऐसा कहा जाता है कि आत्मा प्रतिक्रमण से शुद्ध होता है, परन्तु वस्तुतः प्रतिक्रमणादि पुद्गलाधीन हैं, वे बन्ध के कारण हैं। शुद्धात्मतत्त्व तो प्रतिक्रमण से रहित है। इस दृष्टि से द्रव्य व भाव - दोनों ही प्रतिक्रमण विषकुंभ हैं।

जो मुनिराज प्रतिक्रमणादि के विकल्प से भी रहित हो गये हैं, वे आत्मानुभवी शुद्ध ज्ञान-दर्शन सहित हैं। ऐसे पुरुष थोड़े ही समय में कर्म रहित होकर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।[१]

इसप्रकार इस अधिकार में मोक्षतत्त्व के सम्यक् साधनों पर विचार किया गया है।

९. सर्वविशुद्ध अधिकार -

जीवजीवाधिकार में शुद्धात्मा को श्रद्धा का विषय बनाने के लिए भेदज्ञान की मुख्यता से रागादि भावों को पुद्गल-कर्मनिमित्तक होने से पुद्गलद्रव्य का कहा है और यहाँ सर्वविशुद्धि अधिकार में उपादान की मुख्यता एवं कर्ता-कर्म की दृष्टि से राग आत्मा की ही अवस्था होने से आत्मा का कहा गया है। दोनों अपेक्षाएँ जुदी-जुदी हैं, अतः कोई विरोध नहीं है।

इस सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार को कर्ता-कर्म का उपसंहार भी कहा जा सकता है, क्योंकि इस अधिकार में प्रकारान्तर से कर्ता-कर्म की ही मुख्य चर्चा की है। जो बातें कर्ता-कर्म अधिकार में अनुक्त रह गई, कारणवश कही नहीं जा सकीं, उन्हें भी यहाँ कह दिया गया है। उदाहरणार्थ - आठ कर्म या एक सौ अड़तालीस कर्मप्रकृतियाँ आत्मा के रागादि विकारी भावों की कर्त्ता नहीं है - यह बात बहुत विस्तार से यहाँ कही गई है तथा सांख्य, बौद्धादि की एकान्त मान्यताओं का भी यहाँ निराकरण किया गया है।

दूसरी बात, यहाँ सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप साक्षात् मोक्षमार्ग को भी विशद रीति से प्रकट करके प्राणियों को मोक्षमार्ग में स्थापित करने की प्रेरणा दी गई है, जो कुन्दकुन्द के शब्दों में ही द्रष्टव्य है -

मोक्खपहे अप्पाणं ठवेहि तं चेव झाहि तं चेय।
तत्थेव विहर णिच्चं मा विहरसु अण्णदव्वेसु।।४१२।।

हे भव्य! तू निज आत्मा को मोक्षमार्ग में स्थापित कर, उसी का ध्यान कर, उसी का अनुभव कर और उसी में निरन्तर विहार कर, अन्य द्रव्यों में विहार मत कर!

१०. समयसार में दृष्टान्तों का प्रयोग -

समयसार में सामान्यजनों को समझाने के लिए लौकिक जीवन के ऐसे-ऐसे अनुभूत उदाहरणों का प्रयोग किया गया है जो वस्तुस्थिति को स्पष्ट करने में बहुत सहायक है। जिसप्रकार अनार्यजनों को अनार्य भाषा में समझाये बिना समझ

१. समयसार गाथा ३०४ की 'आत्मख्याति' टीका

१. समयसार नाटक, मोक्ष द्वार, छन्द ४३

में नहीं आता, उसी प्रकार व्यवहारी जनों को व्यवहार की भाषा और सरल दृष्टान्तों के बिना वस्तुस्वरूप समझ में नहीं आता। इसी कारण समयसार में सूक्ष्म सिद्धान्तों को स्पष्ट करने के लिए आचार्यदेव ने दृष्टान्तों का प्रयोग किया है।

१७वीं १८वीं गाथा में राजा के दृष्टान्त से जीवराज को समझाते हुए कहा है जैसे धनार्थी पहले राजा को पहचानकर अपने मन में ऐसा विश्वास जागृत करता है कि यह वस्तुतः राजा है, यदि मैं इसकी सेवा करूँगा तो मुझे अवश्य ही इससे धन की प्राप्ति होगी, फिर वह उसका प्रयत्नपूर्वक अनुचरण करता है उसी प्रकार मोक्ष के इच्छुक पुरुष को पहले जीवरूपी राजा को जानना चाहिए, श्रद्धान करना चाहिए और अनुचरण करना चाहिए तथा उसी में तन्मय हो जाना चाहिए।

३४वीं गाथा में प्रत्याख्यान का स्वरूप समझाने के लिए परवस्तु का दृष्टान्त दिया है। लोक में हुई कोई पर को पर जानकर तुरन्त उसका त्याग कर देता है; उसी प्रकार ज्ञानी पुरुष समस्त परद्रव्यों को पर जानकर उन्हें त्याग देता है, उससे ममत्व छोड़ देता है।

गाथा ४७ व ४८ में व्यवहारनय के समझाने के लिए सेना सहित राजा के निकलने पर राजा निकला है - ऐसा जो कहा जाता है सो वह भी व्यवहार दर्शाया है। ५० से ६० गाथा में इसी को विस्तार से समझाने के लिए 'व्यक्ति को लुटता देख मार्ग लुटता है' - ऐसा दृष्टान्त देकर समझाया है। इसी प्रकार कर्ता-कर्म अधिकार की गाथा १३०-१३१, पुण्य-पापाधिकार की गाथा १६५-१६६ एवं २२० से २२३, बंधाधिकार की गाथा २४० व २४१ मोक्ष अधिकार की गाथा २८८ से २६० भी द्रष्टव्य हैं। इन सबमें विभिन्न दृष्टान्तों से वस्तुस्वरूप को बहुत ही सरल ढंग से स्पष्ट किया है, जो मूलः पठनीय हैं। इति शुभं। ओं नमः ●

अर्हं पाठशाला (ऑनलाईन) प्रवेश प्रारम्भ

श्री वीतराग-विज्ञान मुक्त विद्यापीठ द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला ऑनलाईन कक्षाएं हैं, जिसमें आप जूम एप द्वारा घर बैठे जैनधर्म का अध्ययन कर सकते हैं। बेसिक, इंटरमीडिएट व हायर वर्ग में विभाजित ये कक्षाएं हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड, तमिल, अंग्रेजी आदि छः भाषाओं में संचालित है। सप्ताह में दो दिन सचित्र व आकर्षक ppt द्वारा कक्षा एवं प्रतिमाह विद्वानों द्वारा विशेष विषय पर दो सेमिनार तथा अन्य रोचक एक्टिविटीज होती हैं। ये कक्षाएं हर आयुवर्ग के लोगों को आकर्षित कर रही हैं। अर्हं पाठशाला से जुड़ने हेतु अभी संपर्क करें - 8058890377

एडमिशन फार्म की लिंक प्राप्त करने हेतु उक्त नम्बर पर वाट्सएप करें।

विशेष सूचना

अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में जैनपथप्रदर्शक का विशेषांक शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है; अतः सभी पाठकों से निवेदन है कि उनसे संबंधित फोटो, लेख, संस्मरण आदि वाट्सएप या ईमेल द्वारा अवश्य भेजें।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर
मोबाइल - 9660668506
Email - ptstjaipur@yahoo.com

शोक समाचार

(1) जबलपुर (म.प्र.) निवासी ब्र. मनोजकुमारजी जैन, श्री मनीषजी जैन व श्री मुकेशजी जैन के पिताजी **चौधरी राजकुमारजी जैन** (सेवानिवृत्त मध्यप्रदेश विद्युत निगम) का दिनांक 1 जनवरी को 74 वर्ष की आयु में पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुए शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुए।

(2) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) निवासी श्री अजितकुमारजी जैन (रंगमहल परिवार) का दिनांक 7 जनवरी को 64 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप वहाँ के मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता थे। आप पण्डित ऋषभ कुमारजी के बड़े भाई एवं पीयूषजी जैन जयपुर के ससुरजी थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुए।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित

आठवाँ वार्षिक महोत्सव

(शुक्रवार, दिनांक 28 फरवरी से रविवार 1 मार्च, 2020 तक)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में आयोजित **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आठवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 1 मार्च 2020 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें - इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 901 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 140 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/ जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य **संस्कृत विश्वविद्यालय** की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 29 जून 2020 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित (35) है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल उपलब्ध न हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

(यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **चैतन्यधाम-गांधीनगर (गुज.) में 17 मई से 3 जून, 2020 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।) **- डॉ. शान्तिकुमार पाटील** (प्राचार्य)

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 43 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
5. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
6. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
7. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
8. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
9. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र सभी क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 17 मई से 3 जून 2020 तक चैतन्यधाम (गुज.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **- पण्डित जिनकुमार शास्त्री** (उपप्राचार्य)

-: फॉर्म मंगाने का पता :-

पण्डित जिनकुमार शास्त्री (उपप्राचार्य) (8903201647) (8072446379) श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur@yahoo.com**

-: चैतन्यधाम का पता एवं संपर्क सूत्र :-

चैतन्यधाम, अहमदाबाद-हिम्मतनगर नेशनल हाइवे-48, पोस्ट-धणप, जिला-गांधीनगर (गुज.) 282355; पण्डित सचिन शास्त्री (9924281114), पण्डित मनीष शास्त्री (8087922580)

(चैतन्यधाम अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से 35 किमी. पर है।)

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

4 –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

वैसे देखें तो महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण की क्या स्थिति (हैसियत) थी?

वे सेनापति अर्जुन के सारथी थे। क्या होता है सारथी? आज की भाषा में कहें तो यही तो कहना होगा कि वे अर्जुन की गाड़ी (रथ) के ड्राइवर थे। क्या होती है ड्राइवर की हैसियत? पर महाभारत में पाण्डवों की जीत का श्रेय उन्हीं को दिया जाता है।

समझना-समझाना बातों से ही होता है, वाणी से ही होता है। हमारे तीर्थंकर भी धर्म के प्रचार के लिये समवशरण में बैठकर मात्र बातें ही तो करते हैं। शास्त्रों में भी आचार्य भगवन्तों ने अच्छी-अच्छी बातें ही तो कही हैं, लिखी हैं।

महाभारत में जीत-हार का निर्णय उसी दिन हो गया था, जिस दिन अर्जुन ने निहत्थे श्री कृष्ण को चुना था।

हमें भी मुक्ति का मार्ग उसी दिन प्राप्त होगा, जब हम सारे जगत से मुँह फेरकर, दृष्टि हटाकर अपने को जानेंगे, अपने में ही अपनापन करेंगे, अपने में रम जायेंगे, जम जायेंगे, अपने में ही समा जायेंगे।

सम्पूर्ण जगत को दो भागों में बाँटना है। एक भाग में अकेला आत्मा और दूसरे भाग में सारी दुनियाँ। सारी दुनियाँ से दृष्टि हटाकर दृष्टि को आत्मसम्मुख करना है। यही धर्म है, धर्म की क्रिया भी यही है।

अरे, भाई! सबसे पहले 'मैं' नाम से वाच्य इस ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मा को जानना है, यह जानना है कि यही मैं हूँ, इसी आत्मा में अपनापन स्थापित करना है। फिर इसी आत्मा का ध्यान करना है, इसी में जम जाना है, रम जाना है, समा जाना है, इसी में एकाकार हो जाना है।

पर्याय में भगवान बनने का, अनन्त सुखी होने का एकमात्र यही उपाय है।

'मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ' – इस गीत का संक्षेप में यही सन्देश है।

(क्रमशः)

ज्ञानगोष्ठी संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ देशभूषण-कुलभूषण छात्रावास की सोलहवीं ज्ञानगोष्ठी दिनांक 5 जनवरी को '**सदाचार : एक अनुशीलन**' विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद एवं मुख्य अतिथि पण्डित प्रदीपजी माद्रप औरंगाबाद थे। निर्णायक के रूप में श्री कुलभूषणजी बण्ड औरंगाबाद, श्री सागरजी गाडेकर औरंगाबाद उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान सिद्धेश जैन सावदा जलगांव ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण प्रतीक जैन अम्बड एवं संचालन अनुराग जैन औरंगाबाद व वेदांत जैन वाडेगांव ने किया। अभार प्रदर्शन कुलभूषणजी जैन ने किया।

सप्तम वार्षिकोत्सव संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री सीमंधर दिगम्बर जैन मन्दिर में सप्तम वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा रचित प्रवचनसार मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अरविन्दजी शास्त्री का भी लाभ मिला। इस प्रसंग पर लगभग 200 से अधिक साधर्मियों की उपस्थिति रही। विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी द्वारा संपन्न हुए।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 23 दिसम्बर को '**जीव जीता कर्म हारा**' विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान अंकित जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने एवं द्वितीय स्थान ज्ञायक जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण कपिल जैन बमहोरी (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के रवीन्द्र जैन व विनय जैन ने किया। आभार प्रदर्शन जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

हार्दिक बधाई!

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **अच्युतकांत जैन जसवंतनगर** व **पारस जैन खेकड़ा** ने जैनदर्शन विषय से नेट जेआरएफ एवं **पीयूष जैन गौरझामर** व **जिनेन्द्र शास्त्री** ने हिन्दी विषय से, **अर्पित शास्त्री ललितपुर** ने संस्कृत विषय से तथा **संयम शास्त्री नागपुर** ने जैन बौद्ध गांधी विषय से नेट परीक्षा उत्तीर्ण की।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

यदि आज सबकुछ तुझे प्रतिकूल दिखाई देता है तो दोष किसका?

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

अरे भाई! यदि तुझे आज सबकुछ अपने प्रतिकूल दिखाई देता है तो व्यथित मत हो, समता धारण कर! मात्र यही एक उपाय है और यही तेरे हित में भी है।

तू अपनी प्रतिकूलताओं का आरोप संयोगों पर मढकर उनके प्रति द्वेष करता है, पर जरा पूर्वाग्रह से मुक्त होकर शांत चित्त से विचार तो कर कि तेरी यह मान्यता किस प्रकार यथार्थ से परे है।

जो संयोग तुझे प्रतिकूल भासित होते हैं, वही किसी अन्य को अत्यंत अनुकूल लगते हैं, और तो और तुझे स्वयं जो आज प्रतिकूल दिखाई देते हैं, वही कल तक अनुकूल दिखते थे और हो न हो कल फिर अनुकूल दिखाई देने लगें।

एक बात और!

तुझे जो संयोग आज प्रतिकूल दिखाई दे रहे हैं, उनमें से अधिकतम तो जड़ पदार्थ हैं, चेतन तो बहुत कम हैं। अब अगर वे जड़ पदार्थ और तद्जनित परिस्थितियाँ कल तक तुझे अनुकूल दिखाई देते थे और आज प्रतिकूल दिखाई देते हैं तो उनमें तो राग-द्वेष है नहीं, वे तो राग-द्वेष से प्रेरित होकर तेरे विरुद्ध परिणमन करते नहीं हैं, उनके बारे में तो यह निश्चित ही है कि उनके बारे में अनुकूलता या प्रतिकूलता की धारणा तो तेरी अपनी ही है।

यह सुनिश्चित हो जाने के बाद तू यह विचार क्यों नहीं करता है कि जो बात जड़ संयोगों के बारे में सही है वही बात चेतन संयोगों के बारे में क्यों सत्य नहीं होगी? अर्थात् उनके बारे में इष्ट-अनिष्ट की परिकल्पना तेरी अपनी है, इसमें उनका कोई योगदान नहीं है।

तब व्यर्थ ही उनसे राग-द्वेष करने का क्या प्रयोजन?

प्रत्येक द्रव्य का परिणमन स्वतंत्र है, चाहे वह चेतन हो या जड़ और वे अपने स्वभाव के अनुसार परिणमन करते हैं। उनका कोई भी परिणमन तेरे लक्ष्य से नहीं होता है। यदि तुझे उनका कोई परिणमन इष्ट या अनिष्ट प्रतीत होता है तो यह तेरी अपनी मिथ्या कल्पना है, इसकी वजह से वे तो अपना स्वभाव छोड़ नहीं देंगे, छोड़ ही नहीं सकते हैं।

एक बात और!

मान लीजिए कि कोई चेतन पदार्थ हमारे विरुद्ध परिणमन कर भी रहा है तो विचारणीय बात यह है कि क्या यह उसका इकतरफा परिणमन है? क्या इसमें हमारा अपना कोई योगदान नहीं है?

संभव है कि हमें अपने व्यवहार और उसके विपरीत परिणमन के बीच तत्काल कोई सीधा संबंध दिखाई न भी दे; पर क्या हमारे अशुभकर्म के उदय के बिना कोई भी पदार्थ हमारे विरुद्ध, हमारे प्रतिकूल परिणमित हो सकता है?

नहीं न?

तब यदि मुझे कुछ भी करने की आवश्यकता प्रतीत भी होती है तो कार्यक्षेत्र कौनसा होना चाहिए?

परपदार्थ या मैं स्वयं?

परिवर्तन की आवश्यकता कहाँ है, स्वयं अपने में या परपदार्थों में?

परपदार्थ तो स्वतंत्र हैं, वे तेरे आधीन ही कहाँ हैं कि तू उनमें परिवर्तन कर सके? तुझे ही अपनी मान्यता में परिवर्तन करना होगा। यह तो मात्र एक संयोग है (निमित्त-नैमित्तिक संबंध है) कि उनका अमुक प्रकार का परिणमन हुआ और तेरा शुभकर्मों का उदय हुआ तो वह तुझे अनुकूल लगने लगे या तेरे अशुभ कर्म का उदय हुआ और तुझे वे प्रतिकूल लगने लगे।

देखा तो यह भी जाता है कि उनका इसीप्रकार का परिणमन हमें कभी तो इष्ट-अनिष्ट प्रतीत होता है, कभी नहीं। यदि वे ही इष्ट या अनिष्ट होते तो समान अवस्था में वे हमें सदा ही इष्ट या अनिष्ट क्यों नहीं दिखाई देते हैं?

उक्त सभी युक्तियों से यह बात स्वयं सिद्ध है कि जगत के संयोगों में इष्ट-अनिष्ट की कल्पना व्यर्थ है, मिथ्यात्व है, अहितकारी है और अपनी मान्यता में परिवर्तन ही इससे बचने का एकमात्र उपाय है।

तथास्तु!

76वाँ धार्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

चेन्नई (तमिलनाडु) : यहाँ सैदापेट दिगम्बर जैन मन्दिर में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र पौन्नूरमलै के तत्त्वावधान में शीतकालीन अवकाश के दौरान दिनांक 27 से 29 दिसम्बर तक 76वें धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापतिजी शास्त्री, पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री, पण्डित जयराजजी शास्त्री, पण्डित रामदासजी शास्त्री, पण्डित बसंतजी शास्त्री, पण्डित श्रीकांतजी शास्त्री, पण्डित महावीरजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। श्री अभिनन्दनजी जैन ने पूजन विधियों के बारे में जानकारी दी। शिविर में पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन, ऑनलाइन क्विज आदि के माध्यम से शिविरार्थियों को पढाया गया।

शिविर में बाल कक्षाएं एवं दो प्रकार की प्रौढ कक्षाओं का आयोजन हुआ। प्रौढ कक्षाओं में नयचक्र एवं गुणस्थान विवेचन की कक्षाएं ली गईं।

शिविर के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री चिन्नदुरै इंजीनियर एवं समापन समारोह में डॉ. कनक अजितदास जैन व श्री भूपालन जैन इंजीनियर पधारे। शिविर के अन्तिम दिन परीक्षा ली गई, जिसका पुरस्कार वितरण श्री भूपेन्द्रजी भायाणी परिवार द्वारा किया गया।

शिविर को सफल बनाने में स्थानीय ट्रस्टी श्री अप्पांडैराजनजी जैन ऑडिटर, श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, श्री हरिजी जैन आदि ने तन-मन-धन से सहयोग किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ज्योति जैन ने की। निर्णायक राजकुमार सिंघी, परिणति पाटील, प्रतीति पाटील थे। संचालन संयम देशमाने व आयुष जैन पिपरिया ने किया।

(11) कथाविद् प्रतियोगिता – दिनांक 5 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में विनय जैन ने प्रथम एवं समर्थ जैन विदिशा व आदित्य जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. दीपकजी जैन वैद्य, मुख्य अतिथि श्री शांतिलालजी गंगवाल व श्रीमती कमला भारिल्ल एवं निर्णायक श्री संजयजी सेठी व जिनकुमारजी शास्त्री थे। संचालन अभय जैन व सम्यक् सिंघई ने किया।

(12) नाट्य प्रतियोगिता – दिनांक 10 जनवरी को सायंकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में "You kill water, water will kill you" ने प्रथम एवं 'घर-घर की कहानी' व 'एक मुलाकात' ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष निशांतजी एवं मुख्य अतिथि चिन्मयजी जैन एवं परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे। निर्णायक के रूप में सर्वज्ञजी भारिल्ल उपस्थित थे। संचालन हरीश जैन ने किया।

(13) शोधपत्र वाचन प्रतियोगिता – दिनांक 11 जनवरी को प्रात:काल हुई इस प्रतियोगिता में पवित्र जैन ने प्रथम एवं जितेन्द्र जैन व अमन जैन आरोन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की। निर्णायक के रूप में चर्चित जैन अच्युतकांतजी जैन व अनिलजी जैन उपस्थित थे। संचालन दुर्लभ जैन व नितिन जैन ने किया।

(14) शलाका प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग) – दिनांक 11 जनवरी को सायंकाल हुई इस प्रतियोगिता में समर्थ जैन ने प्रथम एवं स्वप्निल जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्र. विमलाबेन ने की। निर्णायक के रूप में प्रमोदजी शास्त्री व अनेकान्तजी भारिल्ल उपस्थित थे। संचालन दीपम खतौली व चेतन खड़ैरी ने किया।

(15) चित्रकला प्रतियोगिता – दिनांक 30 दिसम्बर को दोपहर में हुई इस प्रतियोगिता में अर्पित जैन भिण्ड ने प्रथम, प्रजल जैन ने द्वितीय एवं विनय जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक सर्वदर्शी भारिल्ल व नीशूजी शास्त्री थे। संचालन प्रजल जैन व आयुष जैन ने किया।

(16) निबन्ध प्रतियोगिता – दिनांक 5 जनवरी को दोपहर में आयोजित इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग में प्रथम स्थान चेतन जैन व द्वितीय स्थान दीपक जैन ने प्राप्त किया। शास्त्री वर्ग में अर्पित जैन ने प्रथम व आप्त अनुशील ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

खेलकूद प्रतियोगिताएं

इसी क्रम में दिनांक 24 दिसम्बर 2019 से 9 जनवरी 2020 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' गीत के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ.भारिल्ल आदि सभी स्थानीय विद्वत्गण व अध्यापकगण उपस्थित थे। दिनांक 6 जनवरी को रतनदीप क्रिकेट स्टेडियम जगतपुरा में श्री प्रदीपजी-आशीषजी जैन परिवार बापूनगर द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन हुआ।

क्रिकेट प्रतियोगिता में विजेता आचार्य अमृतचंद्र टीम एवं उपविजेता जय गोमटेश टीम रही। **बॉलीवॉल** में प्रथम स्थान पर जयगोमटेश-I तथा द्वितीय स्थान पर जयगोमटेश-II टीम रही। **कबड्डी** में प्रथम स्थान पर उपाध्याय वरिष्ठ एवं द्वितीय स्थान पर उपाध्याय कनिष्ठ रही। **स्लो साइकिल** में प्रथम स्थान पर ममित जैन तथा द्वितीय स्थान पर हर्षित जैन रहे। **तस्तरी फेंक** में प्रथम स्थान पर आकाश हलाज एवं द्वितीय स्थान पर धनुषकुमार रहे। **तीन पैर दौड़** में प्रथम स्थान पर अचिन्त्य व आप्तअनुशील जैन एवं द्वितीय स्थान पर हितंकर व शाश्वत जैन रहे। **कैरम (एकल)** में प्रथम स्थान पर अक्षय जैन एवं द्वितीय स्थान पर हर्षित खनियांधाना रहे। **कैरम (युगल)** में प्रथम स्थान पर चेतन-ममित एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन-आयुष रहे। **शतरंज** में अभिषेक देवराहा व अक्षय दलपतपुर विजेता रहे। **बैडमिंटन (एकल)** में प्रथम स्थान पर हितंकर जैन एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन जी. रहे। **बैडमिंटन (युगल)** में प्रथम स्थान पर हितंकर व संवेग जैन एवं द्वितीय स्थान पर जगदीशन व आयुष पिपरिया रहे। **दौड़ रिले (4X100)** में प्रथम स्थान पर जगदीशन, आयुष, चेतनप्रकाश व अक्षत तथा द्वितीय स्थान पर सिद्धांत चौगुले, सम्मेद पाटील, सोहम शाह, आकाश हीरापुर की टीम रही। **दौड़ (100 मीटर)** में प्रथम स्थान आयुष एवं द्वितीय स्थान धनुषकुमार, **दौड़ (200 मीटर)** में प्रथम स्थान जगदीशन एवं द्वितीय स्थान सिद्धांत चौगुले, **दौड़ (400 मीटर)** में प्रथम स्थान जगदीशन ने एवं द्वितीय स्थान धनुषकुमार ने प्राप्त किया। **ऊंचीकूद** में प्रथम स्थान आयुष एवं द्वितीय स्थान जगदीशन ने प्राप्त किया। **रस्सीकूद** में प्रथम स्थान हितंकर एवं द्वितीय स्थान ममित ने प्राप्त किया। **लम्बीकूद** में प्रथम स्थान जगदीशन एवं द्वितीय स्थान सिद्धांत चौगुले ने प्राप्त किया। **गोला फेंक** में प्रथम स्थान आकाश हलाज एवं द्वितीय स्थान आयुष ने प्राप्त किया।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष द्वारा हुआ। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ●

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2020

प्रति,